REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 9 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2020

# धूमिल और नामदेव ढसाल के काव्य में चित्रित आर्थिक विद्रोह

आनंदा मारुती कांबळे
सहाय्यक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, आनंदीबाई रावराणे कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
वैभववाडी, जि. सिंधूदूर्ग, महाराष्ट्र, 416810.

**गोषवाराः**

भारत में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। सभी भाषाओं में साहित्य का निर्माण हो रहा है। भाषाएँ भिन्न हैं, फिर भी साहित्य की आत्मा एक है। विभिन्न भाषाओं और वक्ताओं के साहित्य के बीच की खाई को पाटने के लिए तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है। तो 'तुलनात्मक अध्ययन बहुआयामी है। यह दृष्टिकोण का विस्तार करता है, संकीर्ण सोच को मुक्त करता है। इतना ही नहीं, दूसरों की मदद से हम दूसरों की अहमियत को समझने लगते हैं।

**परिचयः**

साठ का दशक राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उथल–पुथल का समय है। ऐसे में आम आदमी कई समस्याओं से घिरा हुआ था, दबा दिया गया और साठ के दशक की कविताओं में इस आम आदमी की आवाज प्रमुखता से देखने को मिलती है। साठ नए कवियों ने व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर वास्तविकता को प्रस्तुत किया है। इसलिए, 'साठोत्तरी कविता संस्कृति की कविता है, अत्याचार की कविता है, ज्ञान की कविता है, एक ऐसी कविता है जो आम आदमी का सीधा साक्षात्कार करती है।[1]' लोकशाही कविता को हिंदी कविता में प्रभावी बनाने के लिए बच्चन सिंह धूमिल की कविता के बारे में कहते हैं –'धूमिल धूमकेतु की तरह बढ़ता है जिसमें आग होती है, धुआं भी होता है। आधुनिकता है और उसकी आग प्रगतिशील है।[2]'

साहित्य हमेशा समाज और समय के इर्द–गिर्द घूमता है। इसलिए साहित्य में समय और समाज परिलक्षित होता है। साहित्य के माध्यम से लेखक अपने विचार व्यक्त करता है। इसलिए साहित्य में भी, विशेषकर कविता में, लेखक अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है। मराठी में भी ऐसा ही साहित्य रचा गया है। साठ के दशक के मराठी साहित्य में दलित साहित्य का स्थान है। दलित कविता का मूल महाराष्ट्र में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के आंदोलन में है। नामदेव ढसाल ने दलित कविताओं के माध्यम से दलित संस्कृति को चित्रित करने का कार्य किया है। मराठी प्रांत और भाषा से दलित साहित्य हिंदी क्षेत्र और भाषा में भी व्यक्त किया जा रहा है।

दलित साहित्य के प्रणेता नामदेव ढसाल साठ के दशक से लिख रहे हैं। डॉ. नामदेव ढसाल की कविता। बीरा पारसे का मत है–'नामदेव ढसाल की कविताएँ एक क्रांति की तरह हैं, वे न केवल स्थिति को दर्शाती हैं बल्कि तीव्र क्रांति लाने की शक्ति भी रखती हैं।' वहीं नामदेव ढसालजी की कविताओं के

बारे में डॉ. भारती निरगुडकर लिखते हैं–'ढसालजी की कविताओं में गहन आशावाद है, वे क्रांति में विश्वास करते हैं.– इसलिए नामदेव ढसाल मराठी साहित्य में एक नई चेतना को प्रकट करने में सफल हुए हैं। साठ के दशक के मराठी साहित्य में नामदेव ढसालजी का महत्वपूर्ण स्थान है।

साठ के दशक के मराठी लेखक अपने भावनात्मक अनुभव साझा कर रहे थे और हिंदी कवि वास्तविकता की सतह पर आ रहे थे और समाज में कुरीतियों और असमानताओं से दूर भाग रहे थे और अपनी आवाज के माध्यम से खुद को व्यक्त कर रहे थे। इसलिए आम आदमी की पीड़ा को आवाज देने के लिए दोनों भाषाओं में साहित्य का निर्माण किया जा रहा है।

नामदेव ढसालजी का साहित्य केवल किसी व्यक्ति विशेष, समाज या जाति का साहित्य ही नहीं, बल्कि विश्व की समस्त मानव जाति का साहित्य प्रतीत होता है, क्योंकि आम आदमी या आम आदमी भी उस भयावहता से गुजरता है। नामदेव ढसालजी अपना अनुभव प्रस्तुत करते हुए कहते हैं– आम आदमी की जिंदगी में संघर्ष होता है, मौत के बाद उसे स्वर्ग की कोई उम्मीद नहीं होती। जीवन पर धूमिल के विचार एक जैसे हैं, वह जीवन को एक मजबूरी मानते हैं और इसके लिए उन्हें अपनी पहचान के मूल्यों को त्यागने की जरूरत है।'

भारत अब एक स्वतंत्र देश है, लेकिन इस आजादी के बाद भी जब समाज के आम लोग अपने अधिकारों के लिए, न्याय के लिए आवाज उठाते हैं, तो उस आवाज को दबा दिया जाता है, सामने वाले को पीटा जाता है, निर्दोषों को सजा दी जाती है। ऐसे समाज का खामियाजा आम आदमी को भुगतना पड़ता है। धूमिलजी बताते हैं कि इस लोकतंत्र में अपने जुल्म के लिए लड़ने वाले लोगों का क्या होता है – लोकतंत्र कहाँ था जब उस युवक का खून से सना हुआ शरीर सड़क के बीच में गिर गया था?

इसलिए धूमिल का इस लोकतंत्र से विश्वास उठ गया है। उनके लिए आम आदमी का दर्द अहम है। आजादी के बाद भी इस समाज में अवसाद, गरीबी और अन्याय बना हुआ है, इसलिए उन्होंने आजादी के इस शब्द पर से विश्वास खो दिया है – पंद्रह अगस्त एक संदिग्ध बात है। धूमिलजी भी स्वतंत्रता में विश्वास नहीं करते हैं और स्वतंत्रता के अर्थ की खोज करते हुए वे कहते हैं–मैं मरुस्थल में भटकता रहा, फटे पत्तों के अपूर्ण पत्तों के बारे में सोचकर, टूटे हुए फूलों के नीचे सुनसान सड़कों को ढँक रहा था। टूटी–फूटी चीजों के ढेर में' खोई हुई आजादी का मतलब ढूंढते हुए धूमिल आगे कहते हैं–'क्या आजादी सिर्फ पहिया के तीन रंगों का नाम है या इस समाज की वजह से इसका कोई खास मतलब है? इंसान अपनी नैतिकता को भूल रहा है। मूल्य मानव जाति की मानवता दिन–ब–दिन कम होती जा रही है। किसी देश के विकास के लिए बौद्धिक संस्कृति जरूरी है, लेकिन देश की एकता बनाए रखने के लिए नैतिक मूल्यों और मानवता को महत्व देना जरूरी है।'

धूमिलजी भी चाहते हैं कि सब साथ आएं, भाईचारा रखें, लेकिन आज कुछ और ही कह रहे हैं। धूमिल नैतिक मूल्यों के पतन और आज मानवता के उपासक कैसे व्यवहार करते हैं, इसका भी वर्णन करते हैं – 'अब समय है, दुनिया किसी का जलता हुआ चेहरा नहीं देखती। अब न कोई खाली पेट, न काँपता पाँव, हर आदमी सिर्फ अपना धंधा देखता है, सब भाईचारा भूल गए, बस जिंदगी के अँधेरे में सो गए।

इस समाज से आम आदमी को सिर्फ शोषण, दमन, अवमानना और उपेक्षा ही मिली है। उनका जीवन हमेशा दुखों से भरा रहता है, लेकिन उनके परिवार के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराना असंभव लगता है। उसके जीवन का एकमात्र दोष है। समाज का एक वर्ग भूख से तड़प रहा है और दूसरा वर्ग सुख–सुविधाओं से भरा है। ढसालजी ने इस समाज के दोनों वर्गों का बहुत ही वाक्पटु वर्णन किया है – 'मैंने एक अनाथ बच्चे को एक ओर कुत्तों और बिल्लियों के साथ भोजन की तलाश में देखा है, या दो सिरों के बीच खाली दुनिया में मजेक भोजन की तलाश में है।'

इस असमानता को धूमिलजी भी जानते हैं। आम आदमी को परेशान करने के अलावा कोई चारा नहीं है। पूंजीवादी समाज में अमीर अपने जीवन की सभी जरूरतों को पूरा करने में व्यस्त हैं और व्यंग्यात्मक रूप से

कहते हैं –'क्या यह एक लोकतांत्रिक कृत्य है कि मेरी माँ का चेहरा मेरे दोस्त के चेहरे की उम्र में मेरे दोस्त का चेहरा है। पड़ोसी की पत्नी उससे नफरत करती थी।'

बच्चन सिंह कहते हैं, 'धूमिल द्वारा इस्तेमाल किए गए मुहावरे न केवल नए और अजीब हैं बल्कि चौंकाने वाले भी हैं।' धूमिल अपने बारे में कहते हैं–'हां, हां मैं कवि हूं/मैं भाषा में कवि हूं। नामदेव ढसाल की कविता पारंपरिक मूल्यों को नष्ट करने वाली कविता है। तो शब्दों और भाषा की आग नहीं लगती, यानी कविता का सार मिथ्यात्व, अमूर्तता और कल्पना पर निर्भर नहीं है।'

इस भूख की भयावहता को जानकर कवि धूमिलजी ने समाज के दो वर्गों में आम आदमी की दुर्दशा का चित्रण किया है –'बंजर खेतों में कंकाल थे, गोदाम अनाज से भरे हुए थे और लोग भूखे मर रहे थे/मुझे लगा कि मैं इससे गुजर रहा हूँ।' नामदेव ढसालजी ने एक ऐसे समाज की कल्पना की है जिसमें समाज हो, न्याय हो। लोगों को इंसानियत की नजर से देखें तो कोई जाति, धर्म, लिंग नहीं होना चाहिए। इसलिए वे एक ऐसा मानवीय समाज चाहते हैं जिसमें कोई असमानता न हो। बाकी सूर्यवंशियों को किसी को गुलाम नहीं बनाना चाहिए, लूट नहीं करना चाहिए, श्वेत–श्याम नहीं कहा जाना चाहिए, आपको ब्राह्मण नहीं कहा जाना चाहिए, आपको क्षत्रिय नहीं कहा जाना चाहिए, आपको वैश्य नहीं कहा जाना चाहिए, आपको शूद्र नहीं कहा जाना चाहिए। दादा–दादी और जमीन को उनकी गद्दी में दादी माननी चाहिए/गुण गोविंदा सुखी रहें, चांद–सूर्य फीके पड़ जाएं ।

नामदेव ढसाल की तरह धूमिलजी भी शोषण मुक्त स्वस्थ समाज की कल्पना करते हैं। धूमिल के ही शब्दों में –'अब कोई बच्चा भूखा नहीं जाएगा/बारिश में टपकता नहीं/दवा के अभाव में कोई नहीं मरेगा/कोई दम घुटने से नहीं मरेगा/अब कोई किसी की रोटी नहीं छीनेगा।' इसलिए नामदेव ढसाल और धूमिल जी लेखक के रूप में अपने दायित्वों का निर्वाह करते हैं। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और स्थिति का चित्रण करके समाज को एक नया दृष्टिकोण दिया है।

नामदेव ढसाल ने अपने साहित्य में सदियों से जाति व्यवस्था के कारण पीड़ित दलित समुदाय का वर्णन किया है। देश की आजादी तो सबको मिली है, लेकिन दलित समाज को निराशा, लाचारी, अपंग और अन्याय का जीवन मिला है. सदियों से उपेक्षित लोग ही उनके साहित्य का आधार हैं। धूमिल ने अपने साहित्य में सामान्य जीवन के सत्य को पूरी नग्नता और मूर्खता के साथ प्रस्तुत किया है। उनका लोकतंत्र से विश्वास उठ गया है, वे दूसरे लोकतंत्र की तलाश में हैं, इसलिए अशोक वाजपेयी धूमिल को दूसरे लोकतंत्र की तलाश का कवि कहते हैं। तो उनके साहित्य की आत्मा है आम आदमी, उनका दर्द।

## सारांशः

नामदेव ढसाल और धूमिल की कविताएँ वर्तमान समय की विसंगतियों पर प्रहार करने में उपयोगी हैं। बच्चन सिंह धूमिल की काव्य भाषा के बारे में बात करते हैं। वह अपने गांव के खेतों के सड़े–गले चेहरों, खिलती हुई गांठों, छोटी जातियों के दम घुटने वाले जीवन, राजनीतिक विसंगतियों, पदचिन्हों, आसनों में से शब्द चुनता है। धूमिल की कविताओं में मुहावरों का प्रयोग किया गया है।

## संदर्भः

1. राजश्री तावरे, 'धूमिल और नामदेव ढसाल के काव्य में आम आदमी की वेदना', सम्मेलन पेपर, पृष्ठ क्र. १–५
2. बच्चनसिंह–हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास–राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली चौथी संस्करण २०१२ पृष्ठ क्र. ४५१
3. डॉ.बिरा पारसे दलित कवितेतील अस्मिता–स्वरुप प्रकाशन, औरंगाबाद प्रथम संस्करण–२००८ पृष्ठ क्र.११३

4. भ.ह.राजूकरऔर राजकमल बोरा, 'तुलनात्मक अध्ययन स्वरुप और समस्याएँ', वाणी प्रकाश दिल्ली प्रथम संस्करण, १९९०, पृष्ठ क्र.११४

LBP PUBLICATION